शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

कमलेश्वर के उपन्यासों में आम आदमी

प्रा.दत्तात्रय दशरथ पटेल
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय
जलगांव, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

सुप्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार कमलेश्वर ने अपने लेखन में हमेशा मध्य वर्ग के आम आदमी को रखा। उसके दुःख-तकलीफ को उन्होंने स्वयं महसूस किया और उसी को विभिन्न पात्रों के माध्यम से रूपायित किया। इसलिए उनका लेखन कभी भी आउट ऑफ डेट नहीं होने पाया। वे अपने पात्रों को संकटों में डालते हैं, परन्तु उनके भीतर की जिजीविषा उन्हें निरंतर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती रहती है। वह उन्हें टूटने नहीं देती। अनास्था के युग में भी कहीं किसी कोने में आस्था का दीपक टिमटिमाता दिखाई देता है। यही उनके साहित्य की खूबी है। प्रस्तुत शोध पत्र में कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित आम आदमी की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

आम आदमी शब्द आजकल बहुत रूढ हो गया हैं, लेकिन आम आदमी कौन है ? यह प्रश्न जरूर बना हुआ है। आम का शाब्दिक अर्थ है. साधारण, मामूली, सामान्य। आदमी शब्द जन या पुरूष का पर्याय हैं। आम आदमी संबोधन आंग्ल भाषा में आर्डिनरी परसन के समानार्थी है, जिसका ध्वन्यार्थ है पद या स्तर से अविशिष्ट व्यक्ति जनसाधारण का प्रतिनिधित्व करनेवाला साधारण आदमी। यह शब्द समाज के पुरूष वर्ग के लिए प्रयुक्त न होकर समाज की अविभाज्य इकाई स्त्री को भी अपने में सम्मिलित करता है। स्त्री-पुरूष दोनों समाज रूप से जीवन जीते हुए दु:ख-दर्द, अपमान, प्रताडना तथा दो टूक सुख के साझीदार हैं। कमलेश्वर ने लिखा था कि. यह आम आदमी वह है, जो कहीं भी किसी क्षेत्र में नियंता नहीं, हैं पर हर कार्यक्षेत्र की आधारशिला है।1

यह सच हैं कि, आम आदमी सामाजिक व आर्थिक विषमता से त्रस्त हैं, शोषित हैं और स्थिति में स्वंय को विवश पाता हैं। इस तरह हताश औंर जीवन संघर्ष से अविरत जूझने वाले व्यक्ति को हो आम आदमी की कोटि में रखा जाता है। मार्क्सवाद की दृष्टि में मिडिल क्लास को इस परिधि में लिया जाता है। इसे कामन मैन भी कहा जाता है। हिंदी साहित्य में इसे लघु मानव नाम से संबोधित किया गया है।

साठोत्तरी काल में आम आदमी की भंगिमाओं, विचारों में परिवर्तन आया है। इसका कारण तत्कालीन परिस्थिति औंर शिक्षा के परिणाम हैं। आजकल आम आदमी की संवेदना और चेतना ने नई ऊचाईयां छूने और व्यवस्था सुधार की अभिलाषा जताई है, यह एक बडी उपलब्धि है। इस प्रकार आम आदमी के संदर्भ में कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रण दिखायी देता है।

कमलेश्वर ने अपने जीवन काल में 16 उपन्यासों की रचना की। उनके यह उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक, वैचारिक तथा मध्यमवर्गीय, आम आदमी की व्यथा को स्पष्ट करनेवाले हैं। कमलेश्वर के उपन्यासों में आम आदमी अपनी पीडा, वेदना और संत्रास को सहता हुआ बदलाव की उम्मीद रखता है। आज के संघर्ष में आम आदमी की नियति और जिजीविषा किस प्रकार उसका दम तोडकर पंगु बना देती है, इसका जीता-.जागता नमूना कमलेश्वर ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तृत किया है। उन्होंने अपनी प्रतिभा और दूरदृष्टि के माध्यम से समकालीन साहित्य और साहित्यकारों को प्रभावित किया है। इस कारण इनकी तुलना

पाश्चात्य साहित्यकार मेक्सिम गोर्की के साथ करते हुए इनकरेजिंग एक्सलेंस के भारतीय केंद्र की ओर से सम्मानित करते हुए सनद में कहा गया है.हिंदी के युवा लेखकों के हृदय में आपके लिए वही प्यार और आदर है जो प्यार और आदर रूस के युवा लेखकों में मेक्सिम गौर्की के प्रति था।2 इस शलाका पुरूष ने अपनी कुशाग्र बुध्दि, कार्य की कुशलता एवं दूरदृष्टि के माध्यम से समग्र साहित्य को अपने समय के साथ समाज को जोडकर आम आदमी के प्रति प्रतिबध्दता दिखाई है। इस कारण उनके बारे में कहा जाता है. कमलेश्वर का हाथ आम आदमी के साथ।

कमलेश्वर के उपन्यासों में आम आदमी

'तीसरा आदमी' उपन्यास में दिखाया गया है कि, छोटे कस्बे का आदमी दिल्ली जैसे महानगर के जीवन की यांत्रिकता, भीड, अकेलापन, निरर्थकता बोध, संवेदनहीनता के परिवेश में आते-आते कैसे टूटकर बिखर जाता है। नरेश उपन्यास का आम आदमी है। वह भी काम करता है, लेकिन उसका जीवन सुखी नहीं हो पाता तब वह कहता है लगता है कि एक पुराने मकान में बसा दिया गया हूँ, और उसमें मृत्युपर्यंत जीना ही मेरी नियती हैं।3 नरेश का कमरा शहर की गली में है। यहाँ की तंग और गंदी गलियों में शाम का वातावरण बिलकुल सडन भरा और दम घोटने वाला है। दिनभर की थकान के बाद कोई भी अपने कमरे में चैन की नींद नहीं सो सकता। सारे कपड़ों का रंग और बदबू एक खास किस्म की हो जाती है और बिस्तर सडे हुए अनाज की तरह महकने लगते हैं।4 समाज में निरंतर बढती महंगाई ने मानव अस्तित्व को विशेषकर आम आदमी के जीवन स्तर को तहस. नहस कर डाला है। उपन्यासों में बढती मँहगाई से उत्पन्न आर्थिक अभाव की भटटी में जलता हुआ नरेश पत्नी चित्रा से कहता है, चीजें बहुत महंगी हो गई हैं। समझ में नहीं आता कैसे चलेगा।5 नरेश पुत्र के जन्म पर भी खर्च और महंगाई से भयभीत होकर कहता है गुड्डू के खर्च भी बढते जा रहे थे, आमदनी वही थी। बढती हुई महंगाई के कारण लगता था कि, हर महीने तनख्वाह कम होती जा रहीं है। बडी खींचतान रहती हैं।6

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास का प्रमुख पात्र श्यामलाल बाबू एक आम आदमी है। जिन्हें अपने कस्बे इलाहाबाद से दिल्ली आये सात वर्ष हो गये हैं। वे दिल्ली आते समय कुनबा बटोर कर लाये थे। बीमार पत्नी रम्मी, तारा और समीरा दो जवान लडकियां तथा सोलह साल का लडका वीरेंद्र इन सबका भविष्य अजमाने तथा आर्थिक विपन्नता से छुटकारा पाने हेतु अपने कस्बे से महानगर में आये थे। अपना कस्बा छोडते वक्त श्यामलाल बाबू ने कभी यह नहीं सोचा था कि, दिल्ली पहुँचने के एक साल के भीतर ही उन्हें नौकरी से अलग कर दिया जाएगा। फिर इतने कंगाल हो जायेंगे कि न अपने कस्बे लौट पायेंगे और यहीं पैर जमायेंगे। जब श्यामलाल बाबू को नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाता है, तब परिवार की हालत बहुत खराब हो जाती है। उस दिन श्यामलाल बाबू को एक आम आदमी की तरह आभास होता है कि, वह सिर्फ फालतू चीज की तरह रह गये हैं, जिसे फेंका नहीं जा सकता, सिर्फ बर्दाश्त किया जाता है। जिसे सहेजा भी नहीं जाता सिर्फ होने को महसूस किया जाता है।7 आम आदमी किस प्रकार अपने घर को चलता है, उपन्यासकार ने यहाँ दिखाया है।

'आगामी अतीत' उपन्यास का नायक कमलबोस और नायिका चंदा है। उपन्यास में चन्दा आम आदमी की तरह है। कमलबोस और चंदा दोनों एक-दूसरे से बेहद प्यार करते हैं और उनमें विवाह का वादा होता है। आम आदमी अपने जीवन में जिस प्रकार अपना घर-परिवार बसाने का सपना देखता है, उसी प्रकार चंदा भी घर बसाने का सपना देखती है। वह कमलबोस से कहती है,. हम अपने घर के पास एक छोटा.सा सेब का बाग लगायेंगे हाँ और हर पेड में तुम एक चाकू लटका देना कि, जब सेब तोडकर खाओ कीडावाला हिस्सा काट देने की याद रहे।8 लेकिन

संसार में कहाँ आम आदमी के सपने पूरे होते हैं, जो यहाँ चंदा के होते। चंदा का सपना टूट जाता है। और कमलबोस दूसरी औरत से शादी कर लेता है।

लौटे हुए मुसाफिर उपन्यास की स्त्री पात्र नसीबन एक आम आदमी का किरदार निभाती है। उपन्यास भारत-पाकिस्तान के विभाजन पर आधारित है। हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों के नाम देश विभाजन करना चाहते हैं, दंगे करवाते हैं। जब दोनों देशों का विभाजन होता है, तब बस्ती में लोग बगैर कुछ न समझते हुए जश्न मना रहे हैं, तब नसीबन घर में बैठी-बैठी कुढ जाती है। पाकिस्तान बनने पर उसे खुशी नहीं होती। वह सोचती है. दिमाग खराब हो गया है इन लोगों का। अरे पूछो कोई क्या बदलेगा ? अपना नसीब जो है, वही रहेंगा।9 नसीबन समझती है कि, बंटवारे से किसी को फायदा नहीं होने वाला बल्कि राजकारणी लोग खुद का फायदा करने के लिए देश को विभाजित कर रहे हैं।

काली आंधी उपन्यास में जग्गीबाबू आम आदमी हैं। जग्गीबाबू अपने मध्यवित्तीय पारिवारिक जिंदगी को छोडने को तैयार नहीं होते। उन्हें सदैव संघर्षरत जीवन व्यतीत करने में ही आंनद आता हैं। न तो वे अवसरवादी हैं, न स्वार्थी। राजनीतिक फायदा उठाना और कमजोरों का षोषण करना, उन्हें मान्य नहीं। इसलिए अपनी राजनीतिक पत्नी मालती से स्पष्ट कहते हैं. मैं तुम्हारा पति हूँ...फायदा उठा सकनेवाला गैर आदमी नहीं...मैं तुमसे फायदा उठाऊंगा ? सोचो, क्या बात कही है तुमने ?10 जग्गीबाबू का यह विचार स्पष्ट करता है कि, उन्हें कहीं पर भी अपनी राजनीतिक पत्नी से फायदा उठाने की, अवसरवादी बात मान्य नहीं है। वे स्वाभिमान से जीना चाहते हैं और वह भी अपनी खरी कमाई पर। जग्गीबाबू एक आम आदमी की तरह हैं औंर चुनाव प्रणाली में आम आदमी का फायदा राजनीतिक लोग उठाते हैं। उपन्यास में भी उनकी पत्नी मालती विरोधीयों को मुंहतोड जवाब देने के लिए कहती है कि.यही है मेरे पति। पति परमेश्वर, मेरे दोस्त, मेरे प्रेमी और मेरे यार। जो कुछ भी हैं यही हैं, अब मेरे बारे में मेरे चरित्र के बारे में आप जो कुछ पूछना चाहें, इनसे पूछ लीजिए, मेरे पास सबसे बडा जवाब यह है, मेरे पति और ये आपके सामने मौजूद हैं।10

समग्र देश में भाषावाद, प्रांतवाद, साम्प्रदायिकता, गुंडागर्दी, दहशत, भय एवं आंतक का वातावरण निर्माण करना शुरू हुआ और इन सबके मूल में आम आदमी गाजर-मूली की तरह कटता गया। उसका जीवन उच्च एवं मध्यमवर्ग ने मिलकर जानवरों से भी बदतर बना दिया। उसके अज्ञान का लाभ उठाकर दिन-दहाडे उसे धर्म के नाम पर ठगा जा रहा है। फिर भी जीवन के प्रति आस्था होने के कारण आम आदमी बेकारी, गरीबी, लाचारी एवं मजदूरी में ही जीने के लिए संघर्ष करने लगा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 कमलेश्वर, संपादक मधुकर सिंह भूमिका से पृष्ठ क्र. 05 (संस्करण.1977)
2 तीसरा आदमी, कमलेश्वर पृष्ठ क्र. 78 (संस्करण.1989)
3 तीसरा आदमी, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.31 (संस्करण.1989)
4 तीसरा आदमी, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.57 (संस्करण.1989)
5 तीसरा आदमी, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र. 87 (संस्करण.1989)
6 समुद्र में खोया हुआ आदमी, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.14 (प्रथम संस्करण.1980)
7 आगामी अतीत, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र. 27-28 (तीसरा संस्करण.1983)
8 लौटे हुए मुसाफिर, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.98 (प्रथम संस्करण.1971)
9 काली आंधी, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र.10 (तीसरा संस्करण.1978)
10 काली आंधी, कमलेश्वर, पृष्ठ क्र. 91 (संस्करण.1989)